AUTHOR HAYYIM VITAL

NO. 1838

TITLE עץ חיים

RR

These images are from the collection of the Library of the Jewish Theological Seminary (JTS). JTS holds the copyrights to these images. The images may be downloaded or printed by individuals for personal use only, but may not be quoted or reproduced in any publication without the prior permission of JTS.

IMPRINT

CALL NO. ENC 2340

DATE MICROFILMED

הועתק והוכנס לאינטרנט
www.hebrewbooks.org
ע"י חיים תש"ע

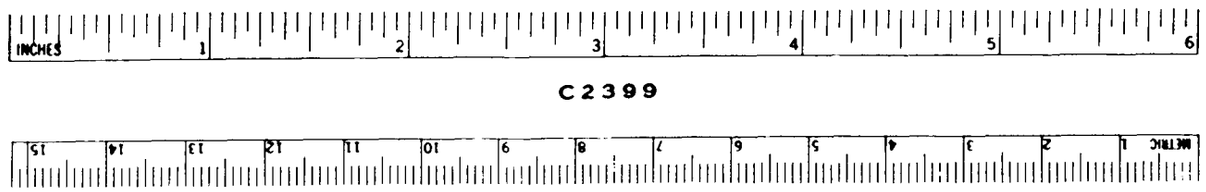

FILMED FOR THE JEWISH THEOLOGICAL SEMINARY OF AMERICA

XEROX University Microfilms, Inc.
A SUBSIDIARY OF XEROX CORPORATION

הועתק והוכנס לאינטרנט
www.hebrewbooks.org
ע"י חיים תש"ע

לסהרח"ו „אוחיל לכתוב שער שלישי מספר עץ חיים והוא ביאור על מצת מאמרי חרשב"י ומאמרי רז"ל. השער הנ' בביאור מצת לשונות מס' הזוהר והתיקונים ועם היות שלשונות אחרים רבים נתבארו בחלקי חדרושים והחדמות ובכל שער החלקים מפוזרים הנה והנה." ועוד הרבה ענינים בריבלה. ספר גדול כולל 174 דפים '2 כחיבת מזרחית. ובסופו מכתיבה אחרת „הצעת היחודים כסדרן זאח"ז." 2 דפים '2.

These images are from the collection of the Library of the Jewish Theological Seminary (JTS). JTS holds the copyrights to these images. The images may be downloaded or printed by individuals for personal use only, but may not be quoted or reproduced in any publication without the prior permission of JTS.

L9

18

[illegible] ভাবিয়া [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] ૧૯૦૫.૧૦.૦

[illegible] ૧૯૦૫.૧૦.૦

[illegible] ૧૯૦૫.૧૦.૦

[illegible] [illegible] [illegible] [

সাধারণ বা ও, রাইনি চলে বিশেষ বন্দোবস্তের কোনো ঠিকানা বা কাহার ব্যবহারের জন্য ব্যবহৃত হয়েছে, ব্যবহারে বাধা দেওয়ার জন্য ব্যবস্থা করা হয়েছে,

চলে যাবার রেজিস্ট্রি করা হয়েছে, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান যে কোনো সময় তার নাম পরিবর্তন করতে পারে, তবে তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে।

নতুন নাম রেজিস্ট্রি করার পর, পুরনো নাম ব্যবহার করা যাবে না। যদি কেউ পুরনো নাম ব্যবহার করে, তবে তার বিরুদ্ধে আইনি ব্যবস্থা নেওয়া হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে।

এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে। এই নিয়ম অনুযায়ী, কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠান তার নাম পরিবর্তন করলে, তাকে নতুন নাম রেজিস্ট্রি করতে হবে, এবং পুরনো নাম বাতিল করতে হবে।

ਨਗਰੀ ਸਰਦਾਰ ਦਰਬ, ਦਰਵਾਰਿਹੂ ਸਭੀ ਸਮਰ ਸਮਰਥੀ ਸੁਮਤਿਮਾਰ ਜਥਾ ਕਥੀ ਪਰਸਾ ਦਰੀ, ਦਰੀ ਸਥਰ ਦਰਸਨ ਸਮਸਨ ਦਸਥਾ ਦਰੀ, ਦਰੀ ਦਰਸ ਸਮਰੀ ਸੁਮਤਿਮਾਰ ਜਥਾ ਦਰੀ ਸਥਰ ਸਮਰੀ ਦਰੀ ਸਮਰੀ ਦਰੀ ਸਮਰੀ ਦਰੀ

১৪৩

ઉપરોક્ત ઠરાવ પ્રમાણે ગામ ચોરવાડ તા. માણાવદર જિ. જૂનાગઢ ના ગામ નમુના નં. ૮ અ ૧ ના પાન નં. ૧૫૧ ના ક્રમ નં. ૧૫૧૭ વાળી જમીન ખેતીવાડી ૧૦ ૭૫ ૦૦ ૧૦ ૭૫ ૦૦ ૧૦ ૭૫ ૦૦

A60

नवरात्रि के पहले दिन घटस्थापना की जाती है। इस दिन प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजा के स्थान को साफ करके वहाँ एक चौकी रखी जाती है। चौकी पर लाल या पीले रंग का वस्त्र बिछाया जाता है। फिर उस पर मिट्टी या धातु का कलश रखा जाता है। कलश में जल भरा जाता है और उसके मुख पर आम के पत्ते रखे जाते हैं। कलश के ऊपर नारियल रखा जाता है। नारियल पर लाल वस्त्र लपेटा जाता है और कलश के चारों ओर मौली बाँधी जाती है।

कलश के नीचे चौकी पर जौ बोए जाते हैं। इसके लिए एक पात्र में मिट्टी भरकर उसमें जौ बोए जाते हैं। जौ बोने के बाद उन पर जल छिड़का जाता है। नौ दिनों में जौ के पौधे उग आते हैं। इन्हें जवारे कहते हैं। जवारे शुभ माने जाते हैं। इनका पूजन भी किया जाता है।

घटस्थापना के बाद अखण्ड दीपक जलाया जाता है। यह दीपक नौ दिनों तक लगातार जलता रहता है। इसे अखण्ड ज्योति भी कहते हैं। दीपक को बुझने नहीं देना चाहिए। इसलिए इसमें पर्याप्त मात्रा में घी या तेल डाला जाता है। दीपक की बत्ती भी समय-समय पर बदली जाती है।

नवरात्रि के दिनों में माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। इन्हें नवदुर्गा कहते हैं। ये नौ रूप हैं — शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। प्रत्येक दिन एक रूप की पूजा होती है।

प्रतिपदा को शैलपुत्री की पूजा होती है। वे पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं। उनके एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में कमल का फूल होता है। वे नन्दी नामक बैल पर सवार हैं। उनकी पूजा से मूलाधार चक्र जाग्रत होता है।

द्वितीया को ब्रह्मचारिणी की पूजा होती है। वे तपस्या की मूर्ति हैं। उनके दाहिने हाथ में जपमाला और बाएँ में कमण्डलु होता है। उनकी पूजा से स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रत होता है।

तृतीया को चन्द्रघण्टा की पूजा होती है। वे सिंह पर सवार हैं। उनके माथे पर घण्टे के आकार का चन्द्रमा है। उनकी पूजा से मणिपुर चक्र जाग्रत होता है।

चतुर्थी को कूष्माण्डा की पूजा होती है। वे सूर्यलोक में निवास करती हैं। उनकी पूजा से अनाहत चक्र जाग्रत होता है।

पञ्चमी को स्कन्दमाता की पूजा होती है। वे भगवान कार्तिकेय की माता हैं। उनकी पूजा से विशुद्ध चक्र जाग्रत होता है।

षष्ठी को कात्यायनी की पूजा होती है। वे महर्षि कात्यायन की पुत्री हैं। उनकी पूजा से आज्ञा चक्र जाग्रत होता है।

सप्तमी को कालरात्रि की पूजा होती है। वे काली का भयंकर रूप हैं। उनकी पूजा से सहस्रार चक्र जाग्रत होता है।

अष्टमी को महागौरी की पूजा होती है। वे गौर वर्ण की हैं। उनकी पूजा से सभी पाप नष्ट होते हैं।

नवमी को सिद्धिदात्री की पूजा होती है। वे सभी सिद्धियों की दात्री हैं। उनकी पूजा से नवरात्रि का व्रत पूर्ण होता है।

नवरात्रि के दिनों में व्रत रखने का भी विधान है। कुछ लोग पूरे नौ दिन व्रत रखते हैं। कुछ लोग पहले और अन्तिम दिन व्रत रखते हैं। व्रत में फलाहार किया जाता है। फलाहार में दूध, दही, फल, मेवा आदि लिए जाते हैं। अन्न का सेवन वर्जित होता है।

कुछ लोग व्रत में सेंधा नमक का प्रयोग करते हैं। सामान्य नमक का प्रयोग नहीं करते। व्रत में चाय, कॉफी आदि का सेवन भी नहीं किया जाता। व्रत में सात्त्विक भोजन ही ग्रहण किया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में कन्या पूजन का भी विशेष महत्त्व है। अष्टमी या नवमी के दिन कन्याओं को भोजन कराया जाता है। उन्हें उपहार दिए जाते हैं। कन्याओं को साक्षात् देवी का रूप माना जाता है।

कन्या पूजन के लिए सामान्यतः नौ कन्याओं को आमन्त्रित किया जाता है। उनके पैर धोए जाते हैं। उन्हें आसन पर बिठाया जाता है। फिर उनकी पूजा की जाती है। पूजा के बाद उन्हें भोजन कराया जाता है।

भोजन में पूरी, हलवा, चने की सब्जी, खीर आदि बनाए जाते हैं। भोजन के बाद उन्हें दक्षिणा दी जाती है। दक्षिणा में वस्त्र, फल, मिठाई आदि दिए जाते हैं। कन्याओं के चरण छूकर आशीर्वाद लिया जाता है।

कन्या पूजन के बाद ही व्रत का पारण किया जाता है। पारण का अर्थ है व्रत खोलना। पारण के बाद ही अन्न ग्रहण किया जाता है। पारण का समय शुभ मुहूर्त में होना चाहिए।

नवरात्रि के दिनों में रात्रि जागरण का भी विधान है। रात्रि में देवी के भजन-कीर्तन किए जाते हैं। माता की आरती की जाती है। रात्रि जागरण से पुण्य की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में दुर्गा सप्तशती का पाठ भी किया जाता है। इसमें देवी के महात्म्य का वर्णन है। इसे चण्डी पाठ भी कहते हैं। इसमें तेरह अध्याय हैं। इसका पाठ बहुत फलदायी माना जाता है।

कुछ लोग नवरात्रि में रामायण का पाठ भी करते हैं। रामायण में भगवान राम की कथा है। इसका पाठ भी पुण्यदायी माना जाता है। इसका पाठ भी रात्रि में किया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में हवन का भी विधान है। हवन में अग्नि में आहुति दी जाती है। आहुति में घी, जौ, तिल, गुग्गल आदि का प्रयोग होता है। हवन से वातावरण शुद्ध होता है।

नवरात्रि के अन्तिम दिन हवन के साथ व्रत का पारण किया जाता है। पारण के बाद कन्या पूजन भी किया जाता है। कन्या पूजन के बाद ही व्रत पूर्ण माना जाता है।

नवरात्रि के दिनों में कुछ लोग मौन व्रत भी रखते हैं। मौन व्रत में वाणी का संयम किया जाता है। इस व्रत में केवल आवश्यक बातें ही की जाती हैं। अधिकांश समय मौन रहा जाता है।

नवरात्रि के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन भी किया जाता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है संयम। इसमें मन, वचन और कर्म से संयम रखा जाता है। विषय-वासना से दूर रहा जाता है।

नवरात्रि के दिनों में भूमि पर शयन का भी विधान है। भूमि पर शयन से तामसिक वृत्तियाँ शान्त होती हैं। इसमें कम्बल या चटाई का प्रयोग किया जाता है। गद्दे का प्रयोग नहीं किया जाता।

नवरात्रि के दिनों में नंगे पैर चलने का भी विधान है। इसे पदयात्रा कहते हैं। पदयात्रा से पुण्य की प्राप्ति होती है। इसमें जूते-चप्पल का प्रयोग नहीं किया जाता।

नवरात्रि के दिनों में दान का भी विशेष महत्त्व है। अन्नदान, वस्त्रदान, धनदान आदि किए जाते हैं। दान से पुण्य की प्राप्ति होती है। दान सुपात्र को दिया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में तीर्थयात्रा का भी विधान है। तीर्थयात्रा से पुण्य की प्राप्ति होती है। इसमें पवित्र नदियों में स्नान किया जाता है। मन्दिरों के दर्शन किए जाते हैं।

नवरात्रि के दिनों में सत्संग का भी विधान है। सत्संग में धर्मग्रन्थों का पाठ होता है। इसमें प्रवचन भी होते हैं। सत्संग से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में स्वाध्याय का भी विधान है। स्वाध्याय में धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है। इसमें मनन और चिन्तन भी किया जाता है। स्वाध्याय से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में ध्यान का भी विधान है। ध्यान में ईश्वर का चिन्तन किया जाता है। इसमें आँखें बन्द करके बैठा जाता है। मन को एकाग्र किया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में प्राणायाम का भी विधान है। प्राणायाम से प्राण शक्ति का विकास होता है। इसमें श्वास-प्रश्वास की क्रिया को नियन्त्रित किया जाता है। इससे मन भी शान्त होता है।

नवरात्रि के दिनों में योगासन का भी विधान है। योगासन से शरीर स्वस्थ रहता है। इसमें विभिन्न आसनों का अभ्यास किया जाता है। इससे शरीर लचीला बनता है।

नवरात्रि के दिनों में मौन व्रत भी रखते हैं। मौन व्रत में वाणी का संयम किया जाता है। इस व्रत में केवल आवश्यक बातें ही की जाती हैं। अधिकांश समय मौन रहा जाता है।

नवरात्रि के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन भी किया जाता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है संयम। इसमें मन, वचन और कर्म से संयम रखा जाता है। विषय-वासना से दूर रहा जाता है।

नवरात्रि के दिनों में भूमि पर शयन का भी विधान है। भूमि पर शयन से तामसिक वृत्तियाँ शान्त होती हैं। इसमें कम्बल या चटाई का प्रयोग किया जाता है। गद्दे का प्रयोग नहीं किया जाता।

नवरात्रि के दिनों में नंगे पैर चलने का भी विधान है। इसे पदयात्रा कहते हैं। पदयात्रा से पुण्य की प्राप्ति होती है। इसमें जूते-चप्पल का प्रयोग नहीं किया जाता।

नवरात्रि के दिनों में दान का भी विशेष महत्त्व है। अन्नदान, वस्त्रदान, धनदान आदि किए जाते हैं। दान से पुण्य की प्राप्ति होती है। दान सुपात्र को दिया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में तीर्थयात्रा का भी विधान है। तीर्थयात्रा से पुण्य की प्राप्ति होती है। इसमें पवित्र नदियों में स्नान किया जाता है। मन्दिरों के दर्शन किए जाते हैं।

नवरात्रि के दिनों में सत्संग का भी विधान है। सत्संग में धर्मग्रन्थों का पाठ होता है। इसमें प्रवचन भी होते हैं। सत्संग से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में स्वाध्याय का भी विधान है। स्वाध्याय में धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है। इसमें मनन और चिन्तन भी किया जाता है। स्वाध्याय से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में ध्यान का भी विधान है। ध्यान में ईश्वर का चिन्तन किया जाता है। इसमें आँखें बन्द करके बैठा जाता है। मन को एकाग्र किया जाता है।

नवरात्रि के दिनों में प्राणायाम का भी विधान है। प्राणायाम से प्राण शक्ति का विकास होता है। इसमें श्वास-प्रश्वास की क्रिया को नियन्त्रित किया जाता है। इससे मन भी शान्त होता है।

नवरात्रि के दिनों में योगासन का भी विधान है। योगासन से शरीर स्वस्थ रहता है। इसमें विभिन्न आसनों का अभ्यास किया जाता है। इससे शरीर लचीला बनता है।